

भगत नामदेव – सबद ५८  
ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥  
रागु कानड़ा, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १३१८

ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥  
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥१॥ रहाउ ॥  
बसै घटा घट लीप न छीपै ॥  
बंधन मुकता जातु न दीसै ॥१॥  
पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥  
नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥२॥१॥

**सार:** हमारे भीतर एक शांत जगह है जो हमारे विचारों के उतार-चढ़ाव की साक्षी रहती है। हमारी इच्छाएँ और डर आते-जाते रहते हैं, फिर भी यह शांति उनसे प्रभावित नहीं होती। परिवर्तन तब शुरू होता है जब हम इस साक्षी भाव वाली उपस्थिति को अपने बेचैन स्वयं से भी अधिक निकट पहचानने लगते हैं। इस आंतरिक शांति को स्वीकार करने से विवेक का उदय होता है। धीरे-धीरे हमारा बेचैन स्वयं स्थिरता प्राप्त करना सीखता है जिससे तुरंत प्रतिक्रिया देने और सोच-समझकर काम करने के और उलझन व स्पष्टता के बीच, एक जगह बनती है। जागृति तब आती है जब हमारी अंतरात्मा विचारों की अराजकता में खोने के बजाय उनकी साक्षी बनती है और यह समझती है कि विचार हमारे संपूर्ण अस्तित्व को परिभाषित नहीं करते।

ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥

राम-राय वह अंतर्यामी, सर्वव्यापी चेतना जो भीतर होने वाली प्रत्येक गति की मौन साक्षी है। यह संकेत करता है कि हमारी अंतरात्मा में स्थित दिव्यता कोई दूर की सत्ता नहीं बल्कि यह जानने की वह स्वाभाविक शक्ति है जो सभी विचारों और इरादों की साक्षी रहती है।

जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ठीक वैसे ही जैसे दर्पण बिना किसी निर्णय के भौतिक रूप को दिखाता है, वैसे ही शुद्ध चेतना, हमारे वास्तविक आंतरिक स्वरूप को प्रतिबिंबित करती है। (१)(विराम)

बसै घटा घट लीप न छीपै ॥

वह हर हृदय में बस, गुणों से अछूती रहती है और न ही उनसे अनजान होती है। यह उस सहज चेतना के स्वभाव को दर्शाता है, जो संस्कारों या परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होती।

बंधन मुकता जातु न दीसै ॥ १ ॥

बंधन की उलझनों से मुक्त और किसी भी स्पष्ट वर्गीकरण के बिना। यह शुद्ध आंतरिक आत्मा के असीम स्वरूप की ओर इशारा करता है, जो सामाजिक ऊँच-नीच, पहचान की चिप्पी या अहं की सीमाओं से दूर है, जहाँ एक ही मूल सत्ता के सामने ऐसे सभी भेद अर्थहीन हो जाते हैं। (१)

पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥

जैसे पानी में चेहरा दिखता है, वैसे ही यह उदाहरण बताता है कि वास्तविकता की अनुभूति, वैसी ही है जैसा हमारा अपना प्रतिबिंब।

नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥ २ ॥ १ ॥

नामदेव कहते हैं कि उनके लिए सर्वव्यापी उपस्थिति ऐसी ही है। यह संकेत करता है कि अस्तित्व के स्रोत का एहसास इसी तरह होता है, जैसे इंसान को अपना ही अक्स दिखाई देता है। (२)(१)

**तत्त्व:** भगत नामदेव अपनी भक्ति को गहन एकत्व-बोध के रूप में व्यक्त करते हैं, जो अत्यंत निकट अनुभव होता है और अकसर वैसे ही महसूस किया जाता है जैसे हम अपना प्रतिबिंब देखते हैं। जब मन अहं, डर या पूर्वाग्रह से घिरा होता है तब सच्चाई बिखरी हुई लगती है। लेकिन, जैसे ही हम अपने भीतर के सत्य को जानते हैं, हमें एहसास होता है कि वह सर्वव्यापी स्रोत हमारे अंदर और हमारे चारों

ओर बहुत निकट मौजूद है और हमारे ही स्वरूप को दर्शाता है। यह उस एकता की सच्चाई को उजागर करता है जो सदा ही मौजूद रही है।

---

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

**Oneness In Diversity Research Foundation**

वेबसाइट: [OnenessInDiversity.com](http://OnenessInDiversity.com)

ईमेल: [onenessindiversityfoundation@gmail.com](mailto:onenessindiversityfoundation@gmail.com)